



शकियत झकझोर देने वाली कहानी

बड़े गुस्से से मैं घर से चला आया
इतना गुस्सा था की गलती से पापा के जूते पहने गए
मैं आज बस घर छोड़ दूंगा....और तभी लौटूंगा जब बहुत बड़ा आदमी बन जाऊंगा ...
जब मोटर साइकलि नहीं दलिवा सकते थे,तो क्यूँ इंजीनियर बनाने के सपने देखते हैं
आज मैं पापा का पर्स भी उठा लाया था....
जैसे किसी को हाथ तक न लगाने देते थे...
मुझे पता है जरुर इस पर्स मैं जरुर पैसो के हिसाब की डायरी होगी....
पता तो चले कतिना माल छुपाया है

.....
माँ से भी ...
इसीलिए हाथ नहीं लगाने देते किसी को..
जैसे ही मैं कच्चे रास्ते से सड़क पर आया ...
मुझे लगा जूतों में कुछ चुभ रहा है
मैंने जूता निकाल कर देखा
मेरी एड़ी से थोड़ा सा खून रसि आया था ...
जूते की कोई कील नकिली हुयी थी
दर्द तो हुआ पर गुस्सा बहुत था
और मुझे जाना ही था ... घर छोड़कर...
जैसे ही कुछ दूर चला
मुझे पांवों में गलि गलि लगा.....
सड़क पर पानी बखिरा पड़ा था
पाँव उठा के देखा तो जूते के तला टुटा था
जैसे तेसे लंगडाकर बस स्टॉप पहुँचा

.....
पता चला एक घंटे तक कोई बस नहीं थी
मैंने सोचा
क्यों न पर्स की तलाशी ली जाये
मैंने पर्स खोला
एक पर्ची दिखाई दी
लखि था लैपटॉप के लिए 40हजार उधार लिए
पर लैपटॉप तो घर मैं मेरे पास है ?
दूसरा एक मुड़ा हुआ पन्ना देखा.....
उसमे उनके ऑफिस की किसी हॉबी डे का लखि था उन्होंने हॉबी लिखी अच्छे जूते पहनना.....
ओह....अच्छे जुते पहनना ???
पर उनके जुते तो!!!!
माँ पछिले चार महीने से हर पहली को कहती है नए जुते ले लो ...
और वे हर बार कहते
अभी तो 6 महीने जूते और चलेंगे ..
मैं अब समझा कतिने चलेंगे.....
तीसरी पर्ची
पुराना स्कूटर दीजिये एक्सचेंज में नयी मोटर साइकलि ले जाइये ...
पढ़ते ही दमिग घूम गया.....
पापा का स्कूटर
ओहहहह मैं घर की ओर भागा.....
अब पांवों मैं वो कील न चुभ रही थी
.....
मैं घर पहुँचा



न पापा थे न स्कूटर
ओहहह नही मैं समझ गया कहाँ गए
....
मैं दौड़ाऔर एजेंसी पर
पहुँचा.....
पापा वहीं थे
मैंने उनको गले से लगा लिया ...
और आंसुओं से उनका कन्धा भगौ दिया.....
नहीं...पापा नहीं.....
मुझे नहीं चाहिए मोटर साइकलि.....
बस आप नए जुते ले लो और मुझे अब
बड़ा आदमी बनना है वो भी आपके तरीके से ...